अशहाज़ टूर एंड ट्रेवल्स

हज एंड उमराह सर्विस

सबसे कम कीमत✶3 स्टार होटल मक्का और मदीना✶हिन्दुस्तानी खाना

INCLUSIONS:

- उमराह वीज़ा
- एयर टिकट
- इनश्योरेंस
- उमराह किट
- होटल
- 3 टाइम खाना
- लांड्री
- ज़ियारत
- 5 लीटर ज़म ज़म

ASHHAZ INTERNATIONAL INC.

Office Address : F-3, First Floor, C-106, Opp. Tikona Park, Jigar Colony, Moradabad-244001 (U.P.) INDIA
Regd. Office : BP-B/38, Ekta Vihar South, Near Flyover, Rampur Road, Moradabad-244001 (U.P.) INDIA

9045464499, 7906890315, 8279573690

ashhaztravels@gmail.com www. asshaztravels.com

HAJJ & UMRAH

GUIDES

ASHHAZ
Tour & Travels
Reach Universal

Hajj✶Umrah✶Visa✶Air Ticket

9045464499, 7906890315, 8279573690

ashhaztravels@gmail.com www. asshaztravels.com

بسم الله الرحمن الرحيم

हज उमराह

गाईड

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ۔

لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ۔

اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ۔

لَا شَرِیْکَ لَکَ۔

मे हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ । मैं हाज़िर हूँ । तेरा कोई शरीक नहीं । मैं हाज़िर हूँ । बेशक तमाम तारीफें और हर क़िस्म की नेअमतें और बादशाहत तेरे ही लिए हैं। तेरा कोई शरीक नहीं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

काबिले मुबारकबाद हैं वो खुशनसीब हज़रात जो ज़ियारते हरमैन शरीफैन की दौलत से मुशर्रफ होने का इरादा रखते हैं। यकीनन आप बड़े खुशकिस्मत और अज़ीम सआदतमंदी के हामिल हैं कि रब्बे काएनात ने अपनी बारगाह में और अपने महबूब रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के दरबार में आपकी हाज़री के असबाब पैदा किये।

अल्लाह की इस तौफीक़ पर उसका शुक्र अदा कीजिए और सफर को शुरू करने से पहले अपने अन्दर तक़वा व तहारत की सिफात पैदा करने की भरपूर कोशिश करें और यह मिजाज़ बनाएं कि अल्लाह के अहकाम और नबी–ए–करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के तरीक़ों के मुताबिक इंशा अल्लाह पूरी ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। आप अल्लाह के बुलाये हुए मेहमान हैं और यह बुलावा आपकी खुसूसियत और आपकी अज़मत की दलील है। इस मुक़द्दस सफर में पेश आने वाले अरकानों का क़दम–बे–क़दम (Step by Step) तरतीब के साथ आसान तरीका आपकी खिदमत में पेश किया जाता है ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह इस खिदमत को कुबूल फरमायें और आपको हज्जे मबरूर और ज़ियारत मक़बूल से नवाज़े।

आमीन।

कबूलियत की दुआ के औक़ात

कुछ लम्हात ऐसे होते हैं जब इंसान की मांगी हुई दुआएं अल्लाह तआला कुबूल फरमा लेता है। जैसे– अरफात के मैदान में वुकूफ़–ए–अर्फा के दिन आदमी जो भी दुआ मांगे उन के लिए अल्लाह रब्बुल हज्ज़त की तरफ से कुबूलियत का वादा है। इसी तरह हिफ्ज़े कुरआन के मौके पर जो भी दुआ मांगी जायें या शबे क़दर के खास लम्हात में या जुमे के दिन साअते इजाबत (मकबूलियत की घड़ी) में जो दुआ मांगी जाये वो कुबूल होती है। कुबूलियत की दुआ के चंद औक़ात दरजे ज़ेल हैं।

(1) रमज़ानुल मुबारक बिलखुसूस आखरी अशरा की ताक़ रातें।

(2) ख़त्मे कुरआन के वक्त मांगी हुई दुआएं।

(3) रोज़ेदार की इफतार के वक़्त की दुआएं।

(4) नमाज़ की अज़ान सुनते वक्त बिल्खुसूस हय्या अललफलाह के बाद।

(5) जुमे की रात मे मांगी हुई दुआएं।

(6) रात के आखिरी पहर मे मांगी हुई दुआएं।

(7) जुमे के दिन साअते इजाबत में मांगी हुई दुआएं।

(8) हुज्जाजे किराम और उमरा करने वालों की दुआएं अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा कुबूल होती हैं। हदीस शरीफ मे आया है कि हाजियों की मगफिरत की जाती है और उन लोगों की भी मगफिरत की जाती है जिनके लिए हुज्जाजे किराम मगफिरत की दुआऐं करते हैं।

मक्का और मदीना में दुआ के कबूल होने के मक़ामात

मक्का मोअज़्ज़मह में और मदीना मुनव्वरह में बहुत से मक़ामात ऐसे है जिन में दुआएं कुबूल होतीं है। इन मक़ामात में दुआओं का बहुत ज़्यादा अहतमाम रखना चाहिए।

मक्का मोअज़्ज़मा के मक़ामात

(1)	दौराने तवाफ	(4)	बैतुल्लाह के अन्दर
(2)	मुल्तजिम पर	(5)	आबे ज़मज़म पीते वक्त
(3)	मीज़ाबे रहमत के नीचे	(6)	मक़ामे इब्राहिम के पास

(7)	सफा पहाड़ी पर	(15)	हतीम के अन्दर
(8)	मरवा पहाड़ी पर	(16)	रुक्ने यमानी के पास
(9)	सई के दौरान	(17)	ग़ारे सौर में
(10)	मैदाने अरफात में	(18)	ग़ारे हिरा में
(11)	मैदाने मुजदल्फा में	(19)	जिस जगह पर दारे अरकम था।
(12)	मैदाने मिना में	(20)	जिस जगह पर हज़रत खदीजतुल कुबरा रजिअल्लाहु अन्हा का मकान था।
(13)	रमी के बाद जमरात के पास	(21)	मकामे मदआ में यह मस्जिद हराम से जन्नतुल मअला की तरफ जाते हुए रास्ते में वाकअ है।
(14)	बैतुल्लाह शरीफ को देखते वक्त		

मदीना मुनव्वरा के मकामात

(1)	रियाजुल जन्नह में	(6)	मस्जिद–ए–फतह में
(2)	सुतूने आयशा के पास	(7)	मस्जिद–ए–कुबा में
(3)	सुतून अबुलबाबा के पास	(8)	मस्जिद–ए–किबलतैन में
(4)	मेहराब नबवी में	(9)	मस्जिद–ए–इजाबा में
(5)	सुफ्फा में		

हज व उमरा के मुबारक सफर की तैयारी

(1) हज व उमरा के मुबारक सफर को शुरू करने से पहले अल्लाह तआला के हुज़ूर सच्चे दिल से सारी ज़िन्दगी के सगीरा, कबीरा गुनाहों से तौबा की जाये और माफी मांगी जाये।

(2) वालिदैन, बहन–भाई बीवी, औलाद, अज़ीज़ों अकारिब, रिश्तेदारों और पड़ोसियों के जो हुकूक आप के ज़िम्मे हैं उन्हे अदा किया जाये।

(3) अगर किसी का कर्ज़ देना है तो अदा किया जाये या अपने कर्ज़ की अदायगी का ज़िम्मेदार बना कर जायें और वसिय्यत कर जायें।

(4) अपने किसी अज़ीज़, रिश्तेदार या किसी भी मुसलमान की दिल आज़ारी, गीबत, ताना, बोहतान, बेइज़्जती, गाली गलौच, लडाई झगड़ा, जुल्म ज़्यादती या हक तलफी की हो तो इन सब से माफी मांग कर जाना है। क्योंकि अल्लाह तआला वालिदैन की नाफरमानी करने वाले, कतअ रहमी करने वाले और कतअ तअल्लुकी करने वाले की दुआएं कुबूल नहीं फरमाता है और ना ही बख्शिश फरमाता है।

(5) दिल को अल्लाह के गैर से खाली करके मौत तक को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्ची मुहब्बत और इताअत (फरमांबरदारी) करने का अजम लेकर जाना है।

(6) सारी ज़िन्दगी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात पर और खुलफाए राशिदीन सिहाबा, अहलेबैत, औलियाए किराम, उलामा–ए–अहले सुन्नत और मस्लक ए इमाम ए–आज़म अबुहनीफा के मसलक पर अमल करता रहुँगा।

कुबूलियत की तौफीक मांगना है।

(7) पांचों फर्ज़ नमाज़ें तकबीर ऊला के साथ, तहज्जुद, कुरआन मजीद की तिलावत, तस्बीह, आयतें करीमा, दरूद शरीफ और सदका का रोज़ाना अहतमाम और नज़रो की हिफाज़त का अज़्म लेकर जाना है।

अल्लाह तआला आप का हज व उमरा कुबूल फरमाए और सारी उम्मत के लिए मगफिरत, बरकत और हिदायत के फैलने का ज़रिया बनाये।

आमीन!

घर से निकलते वक्त

(1) जब घर से निकलने का इरादा करे तो दो रकअत नफिल नमाज़ पढ़ें। पहली रकअत में सूरह फातिहा के बाद قُلْ يَآ اَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी रकअत में सूरह फातिहा के बाद قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़ें। कयाम गाह से निकलने से पहले آيَةَ الْكُرْسِىْ और सूरह لِاِيْلٰفِ قُرَيْش पढ़ें, इंशाअल्लाह पूरे सफर में कोई परेशानी व रूकावट न होगी।

(2) जब घर या कयाम गाह से रवाना हों तो अपनी गुंजाइश के मुताबिक सदका करे और निकलते वक्त यह दुआ पढें

❖ بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

अल्लाह के नाम से सफर शुरू करता हूँ, अल्लाह तआला ही पर भरोसा करता हूँ, मुसीबत से हिफाज़त और इताअत पर कुदरत अल्लाह तआला की मदद के बगैर नहीं हो सकती।

❖ اَللّٰهُمَّ بِكَ اَسُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِيْرُ۔

ऐ अल्लाह, तेरी ही मदद से हौसला और हिम्मत करके पहुंचने का इरादा करता हूँ और तेरी ही मदद से मुसीबत से बचता हूँ और तेरी ही मदद से सफर में चलता हूँ।

(3) जब अज़ीज़ो और दोस्तों से रूख़्सत होने लगे यह दुआ पढ़ें –

❖ اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكُمْ وَاَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكُمْ۔

मैं तुम्हारे दीन तुम्हारी अमानत और तुम्हारे आखरी अमल को खुदा के सुपुर्द करता हूँ।

(4) जब सवारी पर सवार होने लगे तो यह दुआ पढें –

❖ سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ۔ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ۔

अल्लाह की ज़ात पाक है जिसने इसको हमारे इख़्तियार में दिया है और हम इस को अपने काबू में करने के अहल नहीं थे और हम अपने रब के पास ज़रूर लौटने वाले हैं।

(5) दौराने सफर यह दुआ पढ़ते रहें :–

❖ اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ۔ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْاَهْلِ۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ۔

ऐ अल्लाह हमारे इस सफर को हम पर आसान फरमा और इसकी दराजी को हम पर समेट दे। ऐ अल्लाह तू ही सफर में हमारा रफीक है और तू ही हमारे अहलो अयाल की देख भाल करने वाला है। ऐ अल्लाह मैं तेरे दरबार में सफर की मशक्कत से पनाह चाहता हूँ और पनाह चाहता हूँ बूरी हालत देखने से और वापिस आकर घर में बच्चों और माल में बुरी हालत देखने से।

(6) किसी मंज़िल पर ठहरे तो यह दुआ पढ़ें :–

❖ رَبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبَارَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ۔

ऐ मेरे रब! मुझे बरकत के साथ यहाँ उतार और तू बेहतरीन उतारने वाला है।

(7) जब हवाई जहाज़ परवाज़ कर जाये और परवाज़ के दौरान जब समन्दर के ऊपर से गुजरे तो यह दुआ पढें :–

❖ بِسۡمِ اللّٰهِ مَجۡرٖهَا وَمُرۡسٰهَا اِنَّ رَبِّيۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ۔ وَمَا قَدَرُو اللّٰهَ حَقَّ قَدۡرِهٖ وَالۡاَرۡضُ جَمِيۡعًا قَبۡضَتُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطۡوِيّٰتٌ م بِيَمِيۡنِهٖ۔ سُبۡحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ۔

अल्लाह के नाम से इसका चलना है और अल्लाह के नाम से इसका ठहरना है। बेशक मेरा रब बख्शाने वाला रहम करने वाला है, रहीम है। वो लोग खुदा की अज़मत व कुदरत को जैसा कि उसके पहचानने का हक़ है, नहीं पहचानते, हालांकि कयामत के दिन पूरी रूए ज़मीन उसी के कब्ज़–ए–कुदरत में होगीं और तमाम आसमान उसके दस्ते कुदरत में लिपटे हुए होंगे और उसकी ज़ात पाक व बरतर है उन के शिर्क से।

उमराह

अहराम पहनना

(1) बगल के बाल, जेरे नाफ बाल व नाखून वगैरा काट लें।

(2) गुस्ल या वज़ू करें और नीयत करें कि अहराम के लिए गुस्ल या वज़ू कर रहा हूँ।

(3) अहराम के कपड़े पहने लें, दोनों कंधो व सर को ढांक कर रखें और अगर मकरूह वक्त न हो तो सर ढांक कर दो रकअत नफिल नमाज पढ़ें।

(4) सलाम फेरने के फौरन बाद सर से अहराम की चादर हटा लें और बैठे हुए ही उमरे की नीयत करें।

❖ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۤ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْ ھَالِیْ وَتَقَبَّلْھَا مِنِّیْ۔

तर्जुमा – ऐ अल्लाह! मेने नियत की उमरे की। बस तू इसको मेरे लिए आसान फरमा दे और इस को कुबूल फरमा ले।

(5) मर्द हजरात बुलंद आवाज से और औरतें आहिस्ता आवाज से तीन बार तलबिया पढ़ें।

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ۔ لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ۔ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ۔ لَا شَرِیْکَ لَکَ۔

(6) इसके बाद दरूद शरीफ पढ़ें और फिर अपने मकसद के लिए दुआ मांगे। तलबिये के बाद मसनून दुआ यह है :–

❖ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۤ اَسْئَلُکَ رِضَاکَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ غَضَبِکَ وَالنَّارِ۔

नोट : अहराम की हालत में ऐसा जूता पहनना मना है, जो पैर के बीच कदम की उभरी हुई हड्डी को ढांप लें। बेहतर है कि दो पट्टी वाली हवाई चप्पल पहनें। सर खुला रखें और दोनो कंधों को ढांप कर रखें।

हुदूदे हरम में दाखिला

हुदूदे हरम मे पहुंचने पर यह दुआ पढ़ें :–

❖ اَللّٰھُمَّ اِنَّ ھٰذَا حَرَمُکَ وَحَرَمُ رَسُوْلِکَ فَحَرِّمْ لَحْمِیْ وَدَمِیْ وَعَظْمِیْ عَلَی النَّارِ۔ اَللّٰھُمَّ اٰمِنِّیْ مِنْ عَذَابِکَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَکَ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह यह तेरा और तेरे रसूल सल्लल्लाहू अलैहिं वसल्लम का हरम है। पर मेरे गोश्त, खून और हड्डियों को आग पर हराम कर दे। ऐ अल्लाह मुझे अपने अज़ाब से महफूज़ रख, जिस रोज़ तू अपने बन्दों को उठायेगा।

मक्का में दाखिल होते वक्त

जब मक्के में दाखिल होने लगें, तो यह दुआ पढें :–

(तीन मरतबा) ❖ اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لَنَا فِیْھَا۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह हमारे लिए इस बस्ती में बरकत अता फरमा।

❖ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْکَ سُلْطَانًا نَّصِیْرًا

तर्जुमा :– ऐ मेरे रब जहाँ भी तू मुझे दाखिल कर सच्चाई के साथ दाखिल कर और जहाँ से भी तू मुझे निकाल सच्चाई के साथ निकाल और अपनी तरफ से एक इकतिदार को मेरा मददगार बना दे।

मस्जिद-ए-हराम में दाखिला

अदब व अहतराम से मस्जिदे हरम में दाखिल होते हुए अपना दांया पैर अन्दर रखते हुए ऐतिकाफ की निय्यत से दाखिल हो और यह दुआ पढ़ें :–

❖ بِسْمِ اللّٰہِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ۔ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ۔

तर्जुमा :– अल्लाह के नाम के साथ। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहू अलैहिं वसल्लम पर दरूद व सलाम हो। ऐ अल्लाह मेरे गुनाह माफ फरमा दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

फिर नीची निगाहों के साथ अदब से मस्जिदे हरम में बैतुल्लाह शरीफ की तरफ बढ़ जायें।

बैतुल्लाह शरीफ पर पहली नज़र

जब बैतुल्लाह शरीफ पर नज़र पड़े तो इस पर नज़र जमायें और तीन मर्तबा اَللّٰہُ اَکْبَرْ और तीन मर्तबा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ पढ़ें या तीन मर्तबा यह तकबीर पढ़ें।

❖ اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ

यह मकाम और वक्त दुआओं की कुबूलित का है। हदीस शरीफ में आया है कि बैतुल्लाह शरीफ को देखते वक्त मुसलमानों की दुआ कुबूल होती है।

ईमान पर खातमे की दुआ मांगे बिना हिसाब किताब जन्नतुल फिरदौस में दाखिला और शरीयत पर मुकम्मल तौर पर चलने की दुआ मांगे। इसके अलावा अल्लाह तआला से जो भी दुआएं चाहे, मांगे।

इस मकाम पर यह दुआएं भी अल्लाह से मांग सकते है।

या अल्लाह मौत तक मेरी तमाम जाइज़ दुआएं जो मेरे हक़ में बेहतर हों और तुझे पसन्द हो, कुबूल फरमा।

या अल्लाह आज तक तेरे नेक बन्दों ने जो कुछ तुझ से मांगा है और जो तूने उन्हें अता किया है। मैं भी तुझ से उसी का सवाल करता हूँ।

एक मशहूर दुआ यह भी है :–

❖ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْبَیْتِ مِنَ الْکُفْرِ وَالْفَقْرِ وَمِنْ ضِیْقِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

तर्जुमा :– मैं कुफ्र व फक्र और सीने की तंगी व कब्र के अज़ाब से इस घर के रब की पनाह चाहता हूँ

बैतुल्लाह शरीफ को देखते वक्त दोनों हाथ उठाकर दुआएं मांगे। खड़े होकर दुआ मांगना मुस्तहब है।

HAJJ MAP

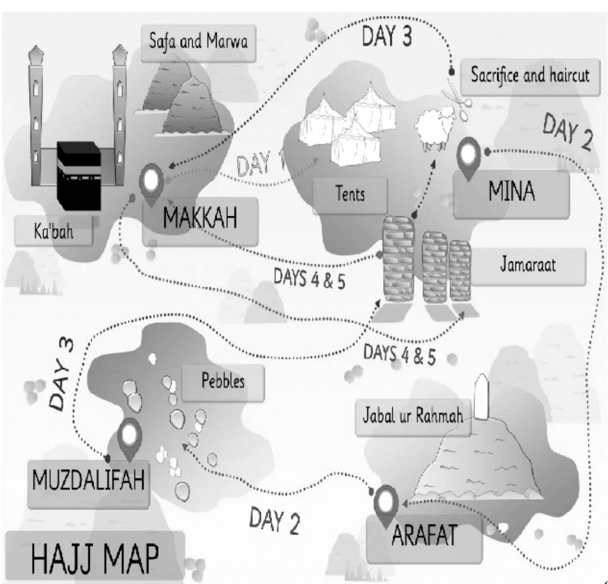

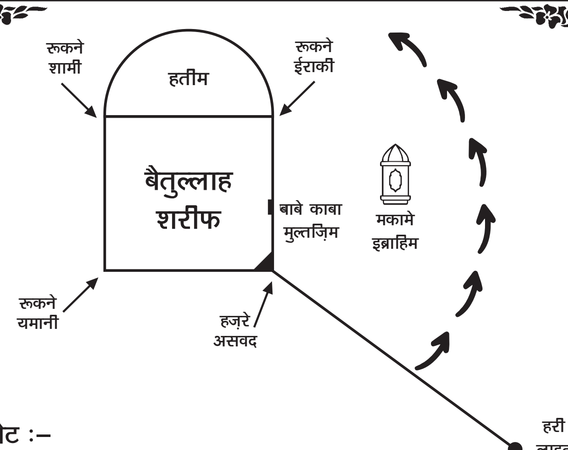

नोट :–

(1) हतीम को शामिल कर तवाफ करें।

(2) तवाफ के दौरान दुआ की तरह हाथ न उठायें या नमाज़ की तरह हाथ न बांधें।

(3) ख्याल रखें कि तवाफ के दौरान निगाह सामने हो। इधर उधर न देखें।

(4) दौराने तवाफ बैतुल्लाह शरीफ की तरफ मुँह करना जायज़ नहीं, सिर्फ हज़रे असवद के इस्तलाम के वक्त जायज़ है।

तवाफ

दुआ से फारिग होकर तकबीर, तलबिया और दरूद शरीफ पढ़ते हुए बैतुल्लाह शरीफ के हजरे असवद के कोने की तरफ पहुँचें और हरी लाइट से कुछ पहले बैतुल्लाह शरीफ की तरफ मुँह करके इस तरह खड़े हो कि हजरे असवद आपकी दार्यी जानिब हो जाये। अब आप –

(1) तलविया पढ़ना बन्द कर दें।

(2) इजतबाअ करें यानीं अहराम की ऊपर वाली चादर को दाहिने बगल से निकाल कर बायें कंधे पर डाल लें। इजतबाअ तवाफ के सातों चक्करों में रहेगा।

(3) तवाफ की नीयत करें :–

''या अल्लाह मेने तेरे मुकद्दस घर के सात चक्करों के तवाफ की निय्यत की, खालिस तेरी खुशनूदी और रज़ा के लिए। बस तू इसको मेरे लिए आसान कर दे और कुबूल फरमा''।

(4) अब दार्यी तरफ इतना खिसके कि आप हरी लाइट की सीध में आ जायें और आपका मुहँ–सीना हजरे असवद के बिल्कुल सामने आ जाये।

(5) नमाज़ की तरह दोनों हाथों को कानों की लौ तक उठायें और अपनी हथेलियों का रूख हजरे असवद की तरफ करें।

❖ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

पढें और दोनों हाथों को गिरा दें।

(6) अगर मौका मिले तो हजरे असवद को बोसा दें और अगर भीड़ की वजह से बोसा न दें सकें तो हजरे असवद के सामने जहाँ आप खड़े हैं, दोनो हाथ सीने तक इस तरह उठायें कि दोनों हथेलियों का अन्दरूनी हिस्सा हजरे असवद की तरफ हो और ऊपर वाली दुआ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ पढ़ कर हथेलियां चूम लें। हजरे असवद को इस तरह बोसा देने को इस्तिलाम कहते हैं।

(7) इस्तिलाम के बाद अपनी जगह खड़े–खड़े दार्यी तरफ मुड़ कर खान–ए–कअबा का चक्कर लगाना शुरू करदें।

(8) तवाफ के पहले तीन चक्करों में मर्द हज़रात रमल करें। पहलवानों की तरह मोढ़े हिला कर ज़रा अकड़कर तेज़ कदमों से चलने को रमल कहते हैं।

(9) तवाफ के चक्करों के दौरान अल्लाह तआला का खूब ज़िक्र करें और खूब दुआएं करें। हजरे असवद और रूकने यमानी (काबे का वह कोना जो हजरे असवद से पहले है रूकने यमानी कहलाता है) के दरमियान जो भी दुआ याद हो और जिसके पढ़ने में जी लगे और दरूद शरीफ खूब पढ़ें।

हजरे असवद और रूकने यमानी के दरमियान पढ़ने वाली छोटी–छोटी दुआएं, जो पढ़ सकते हैं :–

❖ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْن

तर्जुमा – ऐ अल्लाह तेरे सिवाए कोई मअबूद नही, तू हर ऐब से पाक है, बैशक मुझसे बेजा हुआ।

❖ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह मैं तेरी पाकी बयान करता हूँ और तेरी हम्द करता हूँ । तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं। मैं तुझसे बखशिश चाहता हूँ और तौबा करता हूँ।

❖ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَاب

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह मुझे और मेरे मां–बाप को और सब ईमान वालों को बख्श दे, जिस दिन हिसाब किताब का दिन कायम हो।

❖ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَالنَّار

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी रज़ा और जन्नत की भीक मांगता हूँ और मेरी नाराज़गी से और दोज़ख से तेरी पनाह चाहता हुँ।

❖ اَللّٰهُمَّ غَشِّنِىْ بِرَحْمَتِكَ وَجَنِّبْنِىْ عَذَابَكَ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्ला मुझे अपनी रहमत से ढांप ले और अपने अज़ाब से बचा ले।

❖ يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ۔

तर्जुमा :– ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और थामने वाले । तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तेरी रहमत का उम्मीदवार हूँ।

❖ اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَا اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَسَهِّلْ لَنَا اَبْوَابَ رِزْقِكَ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह हमारे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे और रिज़्क की राहें हमारे लिए आसान कर दे।

❖ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

तर्जुमा :– अल्लाह पाक है। सभी तारीफे अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। अल्लाह सब से बड़ा है। ताकत व कुव्वत अल्लाह के सिवा किसी में नहीं, जो बहुत ही बुलन्द और अज़मत वाला है।

❖ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह! बेशक तू माफ करने वाला है। माफ करने को पसंद करता है। बस मुझे भी माफ फरमा दे।

❖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الرَّاحَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابِ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मौत के वक्त राहत का और हिसाब के वक्त माफी का सवाल करता हूँ।

❖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْهُدٰى وَالتُّقٰى وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰى

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह मैं तुझ से हिदायत, परहेज़गारी, आफियत और मोहताज न होने का सवाल करता हूँ।

❖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

(10) तवाफ करते वक्त जब रूकने यमानी के कोने के पास

आये तो इस पर अगर खुशबू न लगी हुई हो, तो दोनों हाथ या सिर्फ दाहिना हाथ फेरें, मगर बैतुल्लाह की तरफ चेहरा न होने पाये।

(11) रूकने यमानी पर बहुत ज़्यादा भीड़ हो या खुशबू लगी हो तो बगैर इशारा किये यूं हीं गुज़र जायें और हज़रे असवद की तरफ चलते हुए यह दुआ पढ़ें :–

❖ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ۔

तर्जुमा :– ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई अता फरमा और आखिरत में भी भलाई अता फरमा और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।

(12) साथ ही साथ दरूद शरीफ भी पढ़ते जायें, इसलिए कि दरूद शरीफ पढ़ना इस वक्त के अहम अज़कार में से हैं।

(13) इस तरह खान–ए–कअबा का चक्कर पूरा कर के, हरी लाइट के सामने पहुँचने पर तवाफ का एक चक्कर पूरा होगा।

(14) तवाफ के हर चक्कर में जब लौट कर हरी लाइट के

सामने पहुँचे तो फिर हजरे असवद का इस्तिलाम करें। यानी दोनों हाथ सीने तक उठाकर بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ पढ़कर हथेलियां चूम लें।

(15) इस तरह सात चक्करों का एक तवाफ होगा, इस हिसाब से एक तवाफ में हजरे असवद का इस्तिलाम आठ दफअ होगा।

(16) तवाफ के आखिरी चक्कर में बाहर की तरफ आते जायें, ताकि तवाफ के पूरा होने पर दूसरों को तकलीफ दिये बगैर आसानी से बाहर निकल सकें।

(17) तवाफ खत्म होने पर दोनों कंधों को अहराम की चादर से दोबारा ढांप लें।

मकामे इब्राहीम पर नमाज़

तवाफ से फारिग होने के बाद मकाम–ए–इब्राहीम पर पहुँचे और वहाँ पहुँच कर ये आयत पढ़ें :‘

❖ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى۔

फिर से दुआ पढ़कर मकामे इब्राहीम के पास दो रकअत

नमाज़ अदा करें। अगर भीड़ की वजह से वहाँ नमाज़ न पढ़ सकें, तो मस्जिद–ए–हराम में कहीं भी दो रकअत नमाज़ वाजिबे तवाफ अदा करें।

दुआ आदम अलैहिस्सलाम

नमाज़ वाजिबे तवाफ से फारिग होकर दुआए आदम अलैहिस्सलाम पढ़ें।

❖ اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ تَعْلَمُ سِرِّی وَعَلَا نِیَتِی، فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِی، وَتَعْلَمُ حَاجَتِی فَاعْطِنِی سُوْلِی، وَتَعْلَمُ مَافِی نَفْسِی فَاغْفِرْلِی ذُنُوْبِی، اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ اِیْمَانًا یُّنَاشِرُ قَلْبِی وَیَقِیْنًا صَادِقًا حَتّٰی اَعْلَمُ اَنَّہٗ لَا یُصِیْبُنِیْ اِلَّا مَا کَتَبْتَ لِی وَرِضًا م بِمَا قَسَمْتَ لِی یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह! तू मेरी ज़ाहिरी और बातिनी हालत को जानता है, मेरा उज्र कुबूल फरमा और तू मेरी हाजत को जानता है, लिहाज़ा मेरी तलब पूरी फरमा। तू मेरे दिल की बात जानता है। मेरे गुनाह माफ फरमा।

ऐ अल्लाह! मैं बेशक तुझसे वो ईमान मांगता हूँ, जो दिल में नक्श हो जाए और सच्चा यकीन ताकि मैं यकीन रखूं कि मुझको सिर्फ इतनी मिकदार पहुँच सकती है, जितना तूने मेरे लिए लिख दिया है और अता फरमा दे मुझको रज़ामन्दी इस पर जो तूने मेरी किस्मत में लिख दिया है। ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले।

मुल्तजिम पर पढ़ने की दुआ

मज़कूरा दुआ से फारिग होकर मुल्तजिम पर आयें, काबे के दरवाज़े और हजरे असवद के दरमियानी हिस्से को मुल्तजिम कहते है। इस से लिपट कर खूब रोयें और दुआ करें। भीड़ की वजह से अगर मुल्तजिम तक पहुँचना मुमकिन न हो सके, तो दूर खड़े होकर अपना मुँह मुल्तजिम की तरफ करके यह दुआ मांगे।

❖ اَللّٰھُمَّ اِنَّ ھٰذَا بَیْتُکَ الَّذِیْ جَعَلْتَہٗ مُبَارَکًا وَّھُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ۔ اَللّٰھُمَّ کَمَا ھَدَیْتَنِی لَہٗ فَتَقَبَّلْ مِنِّی وَلَا تَجْعَلْ ھٰذَا اٰخِرَ الْعَھْدِ مِنْ بَیْتِکَ وَارْزُقْنِیْ الْعَوْدَ اِلَیْہِ حَتّٰی تَرْضٰی عَنِّی بِرَحْمَتِکَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह बेशक यह तेरा घर है, जिसको तूने तमाम आलम के लिए मुबारक और हिदायत का ज़रिया बनाया है। ऐ अल्लाह जिस तरह तूने मुझे इसके (हज/उमरा) के लिए हिदायत दी है, इसी तरह मेरी तरफ से इसे कुबूल फरमा और मेरे इस सफर को अपने मोहतरम घर का आखिरी सफर न बना और दोबारा लौट कर आना नसीब फरमा यहां तक कि तू मुझ से राज़ी हो जा। या अरहमर्राहिमीन, अपनी रहमत से मेरी दुआ कुबूल फरमा।

यहाँ यह दुआएं भी अपने लिए मांग सकते हैं।

या अल्लाह मैं सारी जिंदगी जो भी तुझ से खैर की? दुआ मांगू तू उसे कुबूल फरमा।

या अल्लाह आज तक तेरे नेक बन्दों ने जो कुछ भी तुझसे मांगा है और जो तूने उन्हे अता किया है, मै भी तुझ से उसी का सवाल करता हूँ।

या अल्लाह मुझे दोनों जहानों में आफियत और खुशियों की नेअमतें अता फरमा।

आबे ज़मज़म

दुआ के बाद आबे ज़मज़म पर आये और किबला रूख खड़े होकर तीन सांस में खूब सैर होकर आबे ज़म ज़म पियें। हर सांस के शुरू में بِسْمِ اللّٰہ और सांस के आखिरी में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ पढ़ें। आबे ज़मज़म पीने के साथ साथ इस का कुछ हिस्सा अपने ऊपर छिड़क लें।

ज़मज़म पीने के बाद दुआ मांगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ''ज़मज़म का पानी उस (मकसद) के लिए है, जिस के लिए पिया जाता है।

आबे ज़मज़म पीते वक्त यह दुआ पढ़ें :–

❖ اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَّاسِعًا وَشِفَاءً مِّنْ کُلِّ دَاءٍ۔

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे नफा पहुँचाने वाला इल्म, रिज़्क की कुशादगी और हर बीमारी से शिफा का सवाल करता हूँ।

सई

आबे ज़मज़म पीने से फारिग होने के बाद सई (सफा मरवाह के दरमियान मख्सूस तरीके पर सात चक्कर लगाने को सई कहते है) के लिए सफा पहाड़ी की तरफ जाते हुए एक मरतबा फिर हजरे असवद की तरफ हाथ उठाकर بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَکْبَرْ पढ़ लेना मसनून है।

सफा पहाड़ी की तरफ जाते हुए मस्जिदे हराम से निकलते वक्त यह दुआ पढ़ें :–

❖ بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِکَ۔

तर्जुमा :– अल्लाह के नाम से मस्जिदे हराम से निकलता हूँ। हजूरे अकरम सल्लल्लाहू अलैहिं वसल्लम पर दरूद व सलाम। ऐ अल्लाह मेरे गुनाह बख्श दें और मेरे लिए अपने फज़ल के दरवाज़े खोल दें।

सफा पहाड़ी की तरफ जाते हुए कुरान मजीद की यह आयत पढ़ें :–

❖ اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَۃَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ۔

तर्जुमा :– बेशक सफा और मरवाह अल्लाह तआला की निशानियों में से है।

सफा पहाड़ी पर पहुँच कर किब्ला रूख हो कर, हाथ दुआ की तरह उठाकर तीन मरतबा اللہ اکبر पढ़ें और यह दुआ तीन मरतबा पढ़ कर अल्लाह तआला से दुआ मांगे :–

❖ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ. لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْئٍ قَدِیْرٌ۔

तर्जुमा :– अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई हमसर नहीं। उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए तमाम तारीफें हैं। वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है और वही हर शै (चींज़) पर कादिर है।

यही दुआ मरवाह पहाड़ी पर भी इसी तरह पढ़नी है, जैसे सफा पर पढ़ी गयी।

सफा पहाड़ी से मरवाह पहाड़ी की तरफ जाते हुए कसरत

से कलमा तैय्यबा, चौथा कलमा, तस्बीह और अल्लाह तआला की हम्द व सना करें।

सई के दौरान जब हरे सतून हरी (लाइट) के पास पहुँच जाये, तो हज़रत हाजरा अलैहिंस्सलाम की पैरवी में हरे सतूनों के दरमियान मर्द हज़रात दौड़ने के करीब तेज़ चलें। औरतें आम रफतार से ही चले।

हरे सतूनों के दरमियान यह दुआ पढ़ें :–

❖ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَکْرَمُ۔

तर्जुमा :– ऐ मेरे रब मेरी मगफिरत फरमा और मुझ पर रहम फरमा और मेरे उन गुनाहों को दरगुज़र मरमा जो तेरे इल्म में है, बेशक तू ही सब पर गालिब और ज़्यादा करम करने वाला है।

हरे सतूनों को पार करके मरवाह की तरफ जब आगे बढ़ें तो यह दुआ पढ़ें :–

❖ اَللّٰهُمَّ اسْتَعْمِلْنِیْ بِسُنَّةِ نَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِیْ عَلٰی مِلَّتِهٖ وَاَعِزْنِیْ مِنْ مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ بِرَحْمَتِکَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह मुझको अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहिं वसल्लम की सुन्नतों का पाबन्द बना दे और मुझे उन्हीं के दीन पर मौत अता फरमा और हर गुमराह कुन फितनों से अपनी रहमत के ज़रिये मेरी हिफाज़त फरमा। ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले मुझे अपनी रहमत से नवाज़ दे।

सफा से मरवाह पहाड़ी पहुँचने पर यहाँ भी सफा पहाड़ी की तरह किबला रूख होकर दुआ मांगे। इस तरह सई का एक चक्कर पूरा होगा। इस तरह सात चक्कर मरवाह पर जाकर पूरे हो जायेंगे।

सई के दौरान चौथा कलमा पढ़ते रहें और हर चक्कर में खूब दुआएं मांगे। आखिर में किबले की तरफ रूख कर अल्लाह तआला की हम्द व सना करें और हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहिं वसल्लम पर दुरूद भेजें और अपने लिए दुआ करें।

सई से फारिग होने के बाद अगर मकरूह वक्त न हो तो मस्जिद हराम से आकर दो रकअत नफिल अदा करें।

हलक

सई से फारिग होने के बाद मर्द हज़रात सर के बाल मुंडवाये या कटवाये (मुंडवाना ज़्यादा अफज़ल है) ख़्वातीन एक या दो पोरे के बराबर अपने बाल काटें।

अल्हम्दुलिल्लाह अब आप का उमरा मुकम्मल हो गया और अहराम की पाबन्दियां भी खत्म हो गयीं।

हज

8 जिलहिज्जा, हज का पहला दिन

(1) फज्र की नमाज़ जमाअत से अदा करने के बाद अहराम बांधने की निय्यत से गुस्ल करें। गुस्ल न कर सके तो वुज़ू करलें और मस्जिद–ए–हराम जा कर अहराम बांध लें। अगर मजबूरी की वजह से वहां ना जा सके तो हुदूदे हरम में किसी भी जगह या अपनी कयामगाह पर अहराम बांध लें।

(2) दोनों कंधो व सर को ढांककर दो रकअत नफिल नमाज़ अहराम की निय्यत से अदा करें।

(3) सलाम फेरने के बाद सर से अहराम की चादर हटा लें और हज की निय्यत करें।

❖ لَبَّيْکَ اَللّٰهُمَّ اِنِّی اُرِيْدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ۔

ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ। मैं हज की निय्यत करता हूँ। इसे मेरे लिए आसान फरमा दें और मेरे इस हज को कुबूल फरमा ले।

(4) मर्द हज़रात बुलन्द आवाज़ से और ख्वातीन आहिस्ता आवाज़ से तीन बार तलबिया पढ़ें।

❖ اَللّٰهُ اَكْبَرُ۔ اَللّٰهُ اَكْبَرُ۔ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ۔
اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

मै हाज़िर हूँ, या अल्लाह मैं हाज़िर हूँ। मै हाज़िर हूँ। तेरा कोई शरीक नहीं, मै हाज़िर हूँ। बेशक तमाम तारीफें और नेअमतें और बादशाहत तेरे ही लिए है। तेरा कोई शरीक नहीं।

(5) अगर हज की सई (तवाफे ज़ियारत की सई) से आज ही फारिग होना चाहते हैं, तो नफिल तवाफ के बाद सफा मरवाह की सई कर लीजिए। सई इसी तरह की जायेगी, जैसे कि उमराह के बयान में दिया गया है।

(6) मिना के लिए रवाना हो जाये, अगर मुमकिन हो तो यहाँ मस्जिद खैफ के पास कयाम कीजिए।

(7) ज़ोहर, असर, मगरिब और इशा की नमाज़ें मिना में पढ़ें और पूरे दिन इबादत में मशगूल रहें।

9 जिलहिज्जा, हज का दूसरा दिन

(1) फज्र की नमाज़ मिना में अदा करें।
9 जिलहिज्जा की फज्र से 13जिलहिज्जा की असर तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद तकबीर तशरीक अदा करें।

❖ لَبَّيْکَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْکَ۔ لَبَّيْکَ لَا شَرِيْکَلَکَ لَبَّيْکَ۔
اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ۔ لَاشَرِيْکَ لَکَ۔

(2) मिना से इशराक के बाद इत्मिनान व सुकून के साथ अरफात के लिए तकबीर और तलबिया पढ़ते हुए रवाना हो जायें।

(3) अगर आसानी से हो सके तो अरफात में जवाल से पहले पहुँच जाएं और मस्जिद नमरह में इमाम के साथ ज़ोहर के वक्त, ज़ोहर और असर की नमाज़े एक अज़ान और दो तकबीरों के साथ इकट्ठी अदा करें।

दोनों नमाज़ों के दरयिान सुन्नत–ए–मोअक्किदा या नफिल नमाज़े न पढ़ें।

अगर मस्जिद नमरह न जा सके तो अरफात में जहाँ भी आप रहे दोनों नमाज़े ज़ोहर व असर, दो अज़ानों और दो इकामतों के साथ अपने–अपने वक्तों पर अदा करें।

ज़वाल के बाद ककूफ़ अरफा का वक्त शुरू हो जाता है, इस वक्त मैदान अराफात में रहना ज़रूरी है।

(4) तिलावत कुरान, दरूद शरीफ की कसरत और तलबिया में जी लगायें। खूब दुआएं, तौबा इस्तिग़फार करें और अपने लिए अपने तमाम अज़ीज़ों अक़ारिब व तमाम मुसलमानों के लिए दुआएं खैर मांगे।

इस दिन की सबसे अफज़ल तसबीह

(١) لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِیْ
وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٠٠مرتبہ)

(٢) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ ۔ (١٠٠مرتبہ)

(٣) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (پوری سورۃ)(١٠٠مرتبہ)

(٤) سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۔ (١٠٠مرتبہ)

(٥) اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّ اَتُوْبُ اِلَيْهِ ۔ (١٠٠مرتبہ)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहू अलैहिं वसल्लम की एक हदीसे पाक का मफहूम है कि जो मुसलमान अरफा के दिन (9 जिलहिज्जा) बाद ज़वाल मैदान अराफात में किबला रूख होकर अल्लाह की तसबीह बयान करे तो अल्लाह तआला फिरिश्तों से फरमाता हैं, ऐ मेरे फिरिश्तों! उस बंदे की क्या जज़ा है जिसने मेरी तसबीह व तहलील, तकबीर, ताज़ीम व तारीफ की और मेरे महबूब पर दरूद भेजा! ऐ फरिश्तों! तुम गवाह रहो मैंने उसे बख्श दिया और उसकी शफाअत कुबूल की और अगर वो अहले अराफात के लिए शफाअत करता तो भी कुबूल करता।

वुकूफ खड़े होकर करना अफज़ल है। मुमकिन हो तो जबले रहमत के नीचे वुकूफ करें।

किब्ले की तरफ रूख करके हाथ उठा कर दुआएं व तलविया पढें।

(5) गुरूबे आफताब के बाद तक अराफात में रहे, लेकिन मगरिब की नमाज़ यहाँ अदा न करे और गुरूबे आफताब के बाद मुज़दल्फा के लिए रवाना हो जायें।

9 जिलहिज्जा की रात (मुजदलफा में)

(1) मुज़दल्फा पहुँच कर खाना वगैरा से फारिग होकर वुजू कीजिए और इशा के वक्त एक अज़ान और एक तकबीर से पहले मग़रिब की और फिर ईशा की नमाज़ अदा कीजिए। दोनों नमाज़ों के दरमियान सुन्नत व नवाफिल न पढ़ें, बल्कि मग़रिब व ईशा की फर्ज़ बा जमात पढ़ें। इसके बाद पहले मग़रिब की सुन्नते व नफिल पढ़ें, बाद में इशा की सुन्नतें, वित्र और नफिल पढ़ें।

(2) नमाज़ से फारिग होकर दुआ व इस्तिग़फार में मशगूल हो जायें और फिर कुछ देर आराम करके सुबह की नमाज़ तक शब–बेदारी कीजिए। मुज़दल्फा की रात हाजियों के हक़ में शबे कदर से अफज़ल करार दी गयी है।

इस मैदान में एक मस्जिद मशअर–ए–हराम है, अगर हो सके तो उसमें कुछ देर बैठकर दुआ व ज़िक्र का शरफ हासिल कीजिए।

(3) जमरात (बड़े शैतान व बड़े शैतान) पर कंकरिया मारने के लिए यहाँ से कम से कम 70 कंकरिया चुन लीजिए, कुछ ज़्यादा हो तो बेहतर हैं।

(4) सुबह अव्वल वक्त में फज्र की नमाज़ अदा कीजिए और किब्ला की तरफ मुँह करके खड़े होकर हाथ उठाकर अल्लाह तआला की यह कहते हुए हम्द कीजिए।

❖ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۔ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۔ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

(5) सूरज निकलने से पहले मिना की तरफ कसरत से तलबिया पढ़ते हुए रवाना हो जायें।

10 जिलहिज्जा, कुरबानी का दिन

(1) मिना और मुज़दल्फा के दरमियान कुछ नशबी इलाका हैं, यहाँ असहाबे फील पर अज़ाब नाज़िल हुआ था, यहाँ से इस्तिगफार पढ़ते हुए और ये दुआ पढ़ते हुए तेज़ी से गुज़र जायें।

❖ اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह हम को अपने ग़ज़ब के ज़रिये से हलाक ना फरमा और ना अपने अज़ाब के ज़रिये हलाक फरमा और उससे पहले हम को माफ फरमा।

(2) जब मुज़दल्फा से मिना को पहुँच जायें तो जमरात तक पहुँचने से पहले बार–बार तलबिया पढ़ते रहें और तकबीर व तहलील और इस्तिगफार भी करते रहें।

❖ اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ مِنًى قَدْ اَتَيْتُهَا وَاَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ اَسْئَلُكَ اَنْ تَمُنَّ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰى اَوْلِيَآئِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह ये मकामे मिना है जिसमें मैं हाज़िर हुआ हूँ और मैं तेरा बंदा हूँ और तेरा बंदा ज़ादा हूँ। मैं तुझसे इस बात का सवाल करता हूँ कि तू मेरे ऊपर ऐसा अहसान फरमा जैसा कि तूने अपने औलिया और नेक बंदो पर फरमाया है। ऐ सब से बढ़ कर रहम करने वाले।

(3) आज सिर्फ बड़े शैतान की ही रमी करनी है। जमराह अकबर (बड़े शैतान) की रमी करते वक्त पहली कंकरी के साथ ही तलबिया पढ़ना बंद कर दें और बड़े शैतान पर सात कंकरिया मारें और हर कंकर के साथ यह दुआ पढें :–

❖ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِّلشَّيْطٰنِ وَرِضًى لِّلرَّحْمٰنِ۔

तर्जुमा :– मैं अल्लाह के नाम से शैतान को कंकरी मारता हूँ अल्लाह बहुत बड़ा है। ये कंकरियाँ मै शैतान का मुँह काला करने और अल्लाह को राज़ी करने के लिए मार रहा हूँ।श

इसी तरह 11 वीं, 12 वीं व 13 वीं जिलहिज्जा की रमी करते वक्त हर कंकरी के साथ यही दुआ पढ़ें।

(4) हर जमराह की रमी के बाद दुआ मांगना बहुत मकबूल है।

जिन मकामात में दुआएं कुबूल होती है उन मे से एक यह भी है कि जमरात की रमी के बाद हाथ उठाकर काबा की तरफ रूख होकर दुआ मांगी जायें और यहाँ यह दुआ भी मांग लें।

❖ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا۔

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह इस को मेरे लिए हजे मबरूर बना दे और मेरे गुनाह माफ फरमा दे और मेरी कोशिश को कुबूल फरमा।

(5) बड़े शैतान को कंकरी मारने के बाद खुदा के हुक्म की तामील में कुरबानी करें।

(6) कुरबानी हो जाने के बाद मर्द हज़रात पूरे सर के बाल मुंडवाये या कम से कम पूरे सर के बाल हर जगह से बराबर–बराबर कटवाये और औरतें सारे सर के बाल उंगल के एक पोरे की लम्बाई से कुछ ज़्यादा कतरें।

अब आप का एहराम खुल गया और एहराम की तमाम पाबन्दियाँ भी खत्म हो गयी। गुस्ल कर आम लिबास पहन लें।

(7) अगर इस दिन यानी 10 जिलहिज्जा को थकान न हो तो

मक्का जाकर तवाफे ज़ियारत करें। तवाफे ज़ियारत 12 जिलहिज्जा के सूरज गुरूब होने से पहले कभी भी किया जा सकता है (तवाफ–ए–ज़ियारत का वही तरीका है जो उमरे के तवाफ का है)।

तवाफे ज़ियारत बा वुज़ू ज़रूरी है, इसके लिए एहराम की ज़रूरत नहीं है।

(8) तवाफ के बाद मकामे इब्राहिम के पास दो रकअत नमाज़ नफिल अदा करें। अगर वहाँ भीड़ ज़्यादा हो, तो मस्जिद–ए–हराम में कहीं भी नमाज़ अदा कर लें।

(9) नफिल नमाज़ के बाद ज़मज़म पियें और फिर सई करें (सई का तरीका वही है, जो उमरे की सई का है।

(10) सई के बाद मक्का से मिना कैम्प में लौट आयें।

11 जिलहिज्जा

(1) अगर 10 जिलहिज्जा को तवाफ–ए–ज़ियारत न किया हो तो मक्का जाकर तवाफ–ए–ज़ियारत अदा करें।

(2) तवाफ के बाद मकामे इब्राहिम के पास दो रकअत नमाज़ नफिल अदा करें। अगर वहाँ भीड़ ज़्यादा हो तो

मस्जिद–ए–हराम में कहीं भी नमाज़ अदा करें।

(3) नमाज़ के बाद ज़मज़म पियें और सई पूरी कर मक्का से मिना लौट आयें।

(4) आज जवाल के बाद से लेकर रात तक तीनों शैतानों को 7–7 कंकरिया (कुल 21 कंकरिया) मारनी है। पहले छोटे शैतान को 7 कंकरी मारें और मारते वक्त यह तसबीह पढ़ें।

❖ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِّلشَّيْطٰنِ وَرِضًى لِّلرَّحْمٰنِ۔

(5) फिर किब्ला की तरफ मुँह करके हाथ उठाकर दुआ करें। फिर दूसरे शैतान (दरमियानी) की तरफ जायें और इसको भी इसी तरीके से सात कंकरिया तस्बीह पढ़ते हुए मारें और इसी तरफ काबे की तरफ मुँह करके दुआ करें। दुआ के बाद तीसरे शैतान (बड़े शैतान) को तस्बीह पढ़ते हुए 7 कंकरिया मारे अब दुआ न करें और मिना में अपने कैम्प में इबादत के लिए वापिस आ जायें।

12 जिलहिज्जा

(1) अगर 10 या 11 जिलहिज्जा को तवाफ–ए–ज़ियारत न किया हो, तो मक्का जाकर तवाफे ज़ियारत अदा करें।

(2) तवाफ के बाद मकामे इब्राहिम के पास दो रकअत नमाज़ नफिल अदा करें। अगर वहाँ भीड़ ज़्यादा हो तो मस्जिद–ए–हराम में कहीं भी नमाज़ अदा करें।

(3) नमाज़ के बाद ज़मज़म पियें और सई पूरी कर मक्का से मिना लौट आयें।

(4) आज जवाल के बाद से लेकर रात तक तीनों शैतानों को 7–7 कंकरिया (कुल 21 कंकरिया) मारनी है। पहले छोटे शैतान को 7 कंकरी मारे और हर कंकरी मारते वक्त यह तस्बही पढ़ें :–

❖ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِّلشَّيْطٰنِ وَرِضًى لِّلرَّحْمٰنِ۔

(5) फिर किब्ला की तरफ मुँह करके हाथ उठाकर दुआ करें। फिर दूसरे शैतान (दरमियानी) की तरफ जायें और इसको भी इसी तरीके से सात कंकरिया तस्बीह पढ़ते हुए मारें और इसी तरफ काबे की तरफ मुँह करके दुआ

करें। दुआ के बाद तीसरे शैतान (बड़े शैतान) को तस्बीह पढ़ते हुए 7 कंकरिया मारे अब दुआ न करें। अब आपको इख्तियार है कि 12 जिलहिज्जा रमी के बाद सूरज गुरूब से पहले मीना छोड़ दे या 13 जिलहिज्जा की रमी करके ही मिना छोड़ें।

13 जिलहिज्जा

(1) अगर 13 जिलहिज्जा तक मिना में है तो सुबह सादिक के वक्त तीनों जमरातों पर रमी की तस्बीह पढ़ते हुए कंकरिया मारें और रमी के बाद जैसा 11 व 12 जिलहिज्जा के बयान में बताया गया है, काबे की तरफ मुँह करके हाथ उठाकर दुआए मांगे।

(2) मिना से मक्का के लिए वापिस आ जायें।
13 जिलहिज्जा की असर की नमाज़ के बाद से तकबीर तशरीक जो 9 वीं जिलहिज्जा की फज्र से शुरू की गयी थी पढ़ना बन्द करदें।

तवाफे विदा

हज के बाद जब मक्का मुकर्रमा से वतन वापसी इरादा हो तो तवाफे विदाअ वाजिब है, इस तवाफ का तरीका भी आम नफिल तवाफ की तरह हीं है।

मदीना मुनव्वार

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی

اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ

کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ

اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔

मदीना मुनव्वरा

मदीना जाकर दरबारे नुबुव्वत रसूले करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम में हाज़री एक मोमिन के लिए निहायत अज़ीम सआदतमंदी है और इस हाज़री के लिए जितना भी अदब किया जाये कम है। जो शख़्स भी अपने सीने में ईमानी अहमीयत और दीनी गैरत रखता है, वो मदीना मुनव्वरा हाज़री के वक्त यह कोशिश करता है कि उससे वहाँ रहते हुए कोई ऐसी गुस्ताखी न हो जाये, जो आका–ए–दो जहाँ सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अज़ियत का सबब बनें, जहाँ आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी कब्रे अतहर में तशरीफ फरमा रहें है और अपने जायरीन के सलात व सलाम का जवाब मरहमत फरमाते हैं। बंदा इस हाल में हाज़री की ऐसी कोशिश करें कि आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसे देखकर नागवारी और तकलीफ का एहसास न हो।

इसलिए रसूले करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत का तकाज़ा यह है कि हमारे किसी अमल से

आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ न पहुँचे। आका सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को अज़ीयत न पहुँचाना हीं सबसे बड़ा अदब और ज़ायरीने हरम का अव्वालीन फरीज़ा है। इसलिए इस मामले मे किंसी तरह की कोई कोताही न की जाये और आइन्दा के लिए भी सुन्नतों के अहतमाम का पुख्ता अज़्म किया जाये।

मदीना मुनव्वरा के करीब पहुँचने की दुआ

जब आपकी सवारी मदीना मुनव्वरा के करीब पहुँचे, तो दरूद व सलाम ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें और यह दुआ पढ़ें :–

❖ اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

तर्जुमा :– दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल, और आप की औलाद और आप के सहाबा पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब, दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी, और आप की औलाद और आप के सहाबा पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर।

मदीना मुनव्वरा के दाखिले के आदाब व दुआ

मदीना मुनव्वरा में दाखिल होने से कब्ल अगर मुमकिन हो तो गुस्ल करें और अगर मुमकिन न हो तो वुज़ू करलें और नये कपड़े या धुले हुए कपड़े पहन लें और सरवरे कायनात फखरे दो आलम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर में दाखिल होते वक्त यह दुआ पढ़ें :–

❖ بِسْمِ اللّٰہِ مَاشَآءَ اللّٰہُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ۔
رَبِّ اَدْخِلْنِی مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِی مُخْرَجَ
صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّی مِن لَّدُنْکَ سُلْطٰنًا نَصِیْرًا۔

तर्जुमा :– अल्लाह के नाम से दाखिल होता हूँ, जो अल्लाह तआला चाहेगा, वही होगा, इस की मदद के बगैर बुराई से हिफाज़त नहीं और इताअत पर कुदरत नहीं। ऐ मेरे रब! मुझको सच्चाई के साथ दाखिल फरमा और सच्चाई के साथ निकालीए और अपनी तरफ से मेरे लिए एक ताकतवर मददगार बना दीजिए।

फिर ये दुआ पढ़ें :–

❖ اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ وَارْزُقْنِی مِنْ زِیَارَۃِ رَسُوْلِکَ
صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَا رَزَقْتَ اَوْلِیَآئِکَ وَاَھْلَ طَاعَتِکَ
وَانْقِذْنِیْ مِنَ النَّارِ وَاغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِی یَا خَیْرَ مَسْئُوْلٍ۔

तर्जुमा :– ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे और मुझे अपने रसूल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से वो फायदे अता फरमा, जो तू अपने औलिया और फरमाबरदार बंदो को अता फरमाता है और मुझे जहन्नम की आग से बचा और मेरी मगफिरत फरमा और मुझ पर रहम फरमा और तू मांगे जाने वालों में से सब से बेहतर है।

❖ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ لَّنَا فِیْھَا قَرَارًا وَّرِزْقًا حَسَنًا۔

तर्जुमा :– ऐ मेरे रब! हमारे लिए इस शहर में बेहतरीन ठिकाना और बेहतरीन रिज़्क अता फरमा।

मस्जिदे नबवी में दुखूल के आदाब

जब मदीने मुनव्वरह में दाखिल हो जाये तो अपनी कयाम गाह पर सामान वगैराह रखकर गुस्ल कर सबसे पहले मस्जिद नबवी में दाखिल हो और मस्जिद नबवी में दाखिल से कब्ल किसी दूसरे काम में न लग जाये। हाँ अगर कोई सख्त ज़रूरत पेश आये तो इस से फारिग होकर फौरन दाखिल हो जायें और मस्जिद नबवी में दाखिल होते वक्त ये दुआ पढ़ें :–

❖ بِسْمِ اللّٰہِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ۔ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ
ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ۔

तर्जुमा :– अल्लाह के नाम से दाखिल होता हूँ और दरूद व सलाम नाज़िल हो अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर। ऐ मेरे रब मेरे गुनाह माफ फरमा दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

इस दुआ को पढ़ते हुए दांया कदम अन्दर रखें और ऐतिकाफ की निय्यत के साथ निहायत आजज़ी व इन्कसारी और खुशूअ के साथ मुमकिन हो तो बाबे जिबराइल से दाखिल

होकर पहले रियाजुल जन्नह में दो रकअत तहय्यतुल मस्जिद पढ़ कर दुआ करें और अगर फर्ज़ नमाज़ की जमात खड़ी हो जाये तो इस में शिरकत करलें, यह फर्ज़ नमाज़ तहय्यतुल मस्जिद के काइम मकाम हो जायेगी। अगर रियाजुल जन्नह में भीड़ की वजह से न जा सकें तो मस्जिद में कहीं भी नमाज़ अदा करलें। इसके बाद अल्लाह तआला की इस अज़ीम नेअमत के शुक्रिया में कि इस ने इस दरबारे आली की हाज़िरी की सआदत बख्शी, मुस्तकिल सज्दा शुक्रिया कीजिए कि ''ऐ अल्लाह! जिस तरह तूने महज़ अपने करम से मुझे यहाँ तक पहुँचा दिया, इसी तरह अपने करम से मेरे लिए अपनी रहमत व रज़ा के दरवाज़े खोल दे और अपने महबूबे रसूल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को शफकत व इनायत के साथ मेरी तरफ मुतवज्जा फरमा। मेरा दिल मुबारक तेरे ही हाथ में है।

रोज़ा पुरनूर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलाम पढ़ने के आदाब व तरीका

दो रकअत तहय्यतुल मस्जिद और दुआ से फरागत के बाद निहायत अदब के साथ बाबुस्सलाम से दरूद शरीफ पढ़ते हुए मुवाजा शरीफ (कब्र शरीफ) के पास आये और कब्र शरीफ की जाली से कुछ फासले पर इस तरह खड़े हो जायें कि आपकी पीठ किब्ले की तरफ हो और चेहरा कब्र मुबारक की दीवार की तरफ हो। निहायत अदब और दिल की गहराईयों के साथ इन अल्फाज़ से दरूद व सलाम का नज़राना पेश करें।

- ❖ اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ۔
- ❖ اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہِ۔
- ❖ اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَیْرَ خَلْقِ اللّٰہِ۔
- ❖ اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدَ وُلْدِ اٰدَمَ۔

❖ اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ۔

दरूद व सलाम से फारिग होने के बाद हुजूर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से शफाअत की दरख्वास्त कीजिए। हुजूर गुनाहो के बोझ ने मरी कमर तोड़ दी है। मै अल्लाह के हुजूर अपने गुनाहों से तौबा करता हूँ और अल्लाह से माफी चाहता हूँ। हुजूर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम आप मेरे लिए इस्तिगफार फरमा दीजिए और कयामत के दिन मेरी शफाअत फरमा दीजिए।

हुजूर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से इन अल्फाज़ के साथ भी अपनी शफाअत की दरख्वास्त करें।

❖ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَسْئَلُکَ الشَّفَاعَۃَ وَاَتَوَسَّلُ بِکَ اِلَی اللّٰہِ فِیْ اَنْ اَمُوْتَ مُسْلِمًا عَلٰی مِلَّتِکَ وَسُنَّتِکَ۔

तर्जुमा :– या रसूल अल्लाह मैं आपसे शफाअत का सवाल करता हूँ और अल्लाह की तरफ आप का वसीला चाहता हूँ, इस बात के लिए मैं इस्लाम और आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर मरूं।

इसके बाद आपने उन बुजुर्गो, दोस्तों, अज़ीज़ों का सलाम हुजूर पाक सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुँचाइये, जिन्होने आप से फरमाइश की हो और आपने उनसे वादा कर लिया हो। अगर सब का नाम लेना मुमकिन न हो तो इतना ही अर्ज़ कर दीजिए कि।

हुजूर आप पर ईमान रखने वाले और आप का नाम लेने वाले मेरे चन्द बुजुर्गो, दोस्तों, अज़ीज़ों ने भी आप पर सलाम अर्ज किया है। हुजूर उनका सलाम भी कुबूल फरमाइये और उनके लिए भी अल्लाह तआला से मगफिरत की दुआ फरमाइये वो भी हुजूर की शफाअत के तलबगार और उम्मीदवार है।

सय्यिदुना हज़रज अबुबकर सिद्दीक रजिअल्लाह अन्हु पर सलाम

सरकारे दो आलम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में सलाम पेश करने के बाद एक हाथ के बकदर दाहिने तरफ को हट कर सय्यिदुना हज़रत अबूबकर सिद्दीक रजिअल्लाह अन्हु को इन अल्फाज़ से सलाम पेश करें।

❖ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَلِیْفَۃَ رَسُوْلِ اللّٰہِ

❖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيْرَ رَسُوْلِ اللّٰهِ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰهِ فِي الْغَارِ
وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

सय्यिदुना हज़रत उमर फारूख रजिअल्लाह अन्हु पर सलाम

हज़रत सिद्दीके अकबर रजि0 को सलाम पेश करने के बाद करीब एक हाथ दाहिनी तरफ हट कर हज़रत फारूक–ए–आज़म रजिअल्लाहू अन्हु के रूबरू हाज़िर हो कर इन अल्फाज़ मे सलाम पेश करे :–

❖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ.
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ.

दरूदो सलाम और दुआ से फारिग़ होने के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ कर अल्लाह तआला से मुराद मांगे और जब तक मदीना मुनव्वरा में कयाम रहे, पाँचों नमाज़े मस्जिद नबवी हीं में हाज़िर हो कर अदा करने की कोशिश करें और हमेशा तिलावत, ज़िक्र, दुआ और नफिलों में मशगूल रहें और

वक्त इधर–उधर ज़ाया न करें और रातो रात इबादत व यकसूई में रातों को जागते रहे और रियाजुल जन्नह में जितना हो सके नफिल नमाज़ अदा करने की कोशिश करें। रियाजुल जन्नह में दुआएं बहुत कुबूल होतीं है।

अहले बकीअ पर सलाम

कब्रिस्तान बकीअ हर वक्त खुला नहीं रहता, बल्कि बन्द रहता है और जनाज़ा ले जाने के लिए खोला जाता है और आम तौर से असर की नमाज़ के बाद दाखिल होने में आसानी होती है अहले बकीअ पर इन अल्फाज़ में सलाम पढ़ें :–

❖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ فَاِنَّا اِنْشَا اللّٰهُ بِكُمْ لَا حِقُوْنَ۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَهْلِ الْبَقِيْعِ ۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ۔

तर्जुमा :– ईमान वाली कौम तुम पर सलाम हो। बेशक हम इंशाअल्लाह तुम से मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह! अहले बकीअ की मगफिरत फरमा। ऐ अल्लाह हमारी और इनकी मगफिरत फरमा।

अहले बकीअ को इसाले सवाब

अहले बकीअ को सलाम पेश करने के बाद :–

1 बार सूरह कौसर, सुरह काफिरून, सुरह इखलास, सुरह फलक, सुरह नास, सुरह फातिहा,

सूरह बकरह की शुरू की आयत नं0 1 से आयत नं0 5 مُفْلِحُوْن तक।

आयतुलकुर्सी

सूरह बकरह की आखिरी दो आयते اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से आखिर तक

सूरह सायीन

सूरह तबारकल्लज़ी

सूरह कदर اِنَّا اَنْزَلْنَا

सूरह तकासुर اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ

सूरह काफिरून

सूरह इखलास तीन मरतबा से लेकर 11 मरतबा तक पढ़कर तमाम अहले बकीअ और तमाम मोमिनीन व मोमिनात को सवाब पहुँचा दें और अगर सब सूरते न पढ़ सके तो जितनी भी हो सके पढ़कर सवाब पहुँचा दें।

मदीना मुनव्वरा से वापसी

जब मदीनातुल मुन्नवरा से वापसी का इरादा हो तो रियाजुल जन्ना में या मस्जिद–ए–नबवी के किसी भी हिस्से में दो रकअत नफिल पढ़ कर रोज़–ए–अतहर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हाज़िर हो कर पहले की तरह दरूद वा सलाम पेश करें। फिर अल्लाह तआला से दुआ करे कि ऐ अल्लाह हरम–ए–नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ज़ियारत को मेरे लिए आखिरी ज़ियारत ना बना और मेरे लिए दोबारा हाज़िरी नसीब फरमा। ऐ अल्लाह मेरे इस हज/उमराह और मेरी इस ज़ियारत को शरफे कबूलियत से हमकिनार फरमा। मुझे दोनो जहानों में सलामती व आफियत नसीब फरमा और मुझे अपने घर एहल–व अयाल में सलामती, आफियत और अजरो सवाब के साथ पहुँचा दें।

इस के बाद निहायत हसरत और सदमे के साथ प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रुखसत हों।

आपकी नेक दुआओं के तलबगार

اَللّٰهُمَّ هٰذَا حَرَمُ رَسُوْلِكَ فَاجْعَلْ دُخُوْلِىْ وِقَايَةً مِّنَ
النَّارِ وَاَمَانًا مِّنَ الْعَذَابِ وَسُوْءِ الْحِسَابِ۔

फातिहा का आसान तरीक़ा

सबसे पहले तीन बार दरूद शरीफ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

फिर ये पढ़ें (तौज़ और तस्मिया)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फिर इसके बाद 1 बार सूरह काफिरून ये वाली सूरह पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ O لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ

O وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ O وَلَآ

اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ O وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ

مَآ اَعْبُدُ O لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِىَ دِيْنِ O

फिर इसके बाद 3 बार सूरह इखलास पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ O اَللّٰهُ الصَّمَدُ O لَمْ يَلِدْ

وَلَمْ يُوْلَدْ O وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ O

फिर इसके बाद 1 बार सूरह फलक़ पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ O مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

O وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ O وَمِنْ

شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ O وَمِنْ شَرِّ

حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ O

फिर इसके बाद 1 बार सूरह नास पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ O مَلِكِ النَّاسِ O

اِلٰهِ النَّاسِ O مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

O الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ O مِنَ

الْجِنَّتِه وَالنَّاسِ O

फिर इसके बाद 1 बार सूरह फ़ातिहा पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ O الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

O مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ O اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ

نَسْتَعِيْنُ O اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ

O صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ لا

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ O

फिर इसके बाद 1 बार सूरह बक्र पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ O ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى

لِّلْمُتَّقِيْنَ O الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوتَه وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ O

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ

مِنْ قَبْلِكَ ج وَبِالْاٰخِرَتِه هُمْ يُوْقِنُوْنَ O

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ق وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

الْمُفْلِحُوْنَ O

وَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ
الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ❖ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ
قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ❖ وَمَا
أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ❖ مَا
كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ
وَلٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ❖
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا إِنَّ اللَّهَ
وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا
تَسْلِيمًا

फिर यह पढ़ें

तमाम सूरह पढ़ने के बाद अपने दोनों हाथों को उठाकर अल्लाह की बारगाह में दुआ करें ।

ऐ मेरे पाक परवर दिगारे आलम मेने कुछ मखसूस आयत–ए–करीमा की तिलावत की और दरूद पाक पढ़ा मेरे पढ़नें में जो भी गलतियाँ हो गई हो उनको मुआफ फरमाकर अपनी बारगाहे व आलिया में कुबूल फरमा तमाम ज़िकरे खैर का सवाब सबसे पहले हमारे नबी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश करता हूँ मौला कबूल फरमा ।

और इनके बाद हुज़ूर के वसीले से तमाम रसूलाने इज़ाम अम्बियाय किराम अलौहिमुस्स्लाम की बारगाह में पेश करता हूँ मौला कबूल फरमा और जुमला सिहाबए किराम ताबिईन ताबिआत रजियल्लाहुअनहूम की बारगह में पेश करता हूँ मौला कबूल फरमा । व जुम्ला शुहादा–ए–किराम औलिया–ए–किराम व उलमा–ए–दीन की बारगाहों मे पेश करता हूँ मौला कबूल फरमा, जितने भी इस दुनिया से इमानी हालत में रुक्सत फरमा गये हैं सबकी बारगाहो में पेश करता हूँ मौला कबूल फरमा सबकी बे हिसाब मगफिरत फरमा और उनको जन्नतुल फिरदोस मे आला मक़ाम अता फरमा और तमाम इस्लामी भाईयों को अपनी बारगह मे कबूल फरमा अच्छा सिला अता फरमा । तमाम उम्मत–ए–मुस्लिमा की हिफाज़त फरमा। आपस में इत्तिफाक व इत्तिहाद अता फरमा । इस्लामी जिन्दगी और ईमानी मौत नसीब फरमा और इन्तिकाल के वक्त कलिमा श्हादत पढ़ना नसीब फरमा, और मेरे मौला मेरी तमाम दुआओं को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से कबूल फरमा।

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّم

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ O
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ O وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ O